UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 18 रानी चेन्नम्मा (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

एक बार कित्तूर के राजा मल्लसर्ज काकति आए, जहाँ नरभक्षी बाघ का आतंक था। वे बाघ का शिकार करनेवाली सैनिक वेश में सजी सुंदर कन्या की वीरता और सौन्दर्य पर मुग्ध हो गए। यह कन्या काकति के मुखिया की पुत्री थी, जिससे मल्लसर्ज ने शादी कर ली और यह कित्तूर की रानी चेन्नम्मा बन गई। राजा मल्लसर्ज ने 1782 से 1816 ई० तक चौंतीस वर्षों तक कित्तूर पर राज किया। वे शासन प्रबन्ध में चेन्नम्मा का परामर्श लेते थे।
राजा मल्लसर्ज की मृत्यु के बाद उनका पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज गद्दी पर बैठा। शीघ्र ही उसकी मृत्यु से कित्तूर के उत्तराधिकारी का प्रश्न आया। अँग्रेज कित्तूर पर अधिकार करना चाहते थे। रानी चेन्नम्मा ने प्रण किया कि मैं जीते जी कित्तूर को अँग्रेजों के हवाले नहीं करूंगी। अँग्रेजों को कित्तूर की स्वाधीनता खटक रही थी। 23 दिसम्बर 1824 को कलक्टर थैकरे ने कित्तूर पर घेरा डाल दिया। हार हो जाने पर चालीस अँग्रेजों को बन्दी बनाया गया। रानी चेन्नम्मा अँग्रेज स्त्रियों और बच्चों को अतिथिगृह में ले गईं और सूचना दे दी कि शत्रुपक्ष अपने बच्चों और स्त्रियों को ले जाए। रानी की इस उदारता का शत्रुओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। 'पराजय के बाद कलक्टर थैकरे ने अनेक प्रयास किए; किन्तु वह सफल नहीं हुआ। अन्त में रानी के वीर सैनिक बालप्पा के सटीक निशाने से थैकरे परलोक सिधार गया। यह निर्णायक युद्ध था, जिसमें रानी चेन्नम्मा ने विजय प्राप्त की। कित्तूर के मुठ्ठी भर वीरों से अँग्रेजी सेना को मुँह की खानी पड़ी। अन्तत: दिसम्बर 1824 ई० में अंग्रेजों ने पुनः कित्तूर पर हमला किया। पाँच दिन तक युद्ध चलने के बाद 5 दिसम्बर, 1824 ई० को अँग्रेजों का झण्डा कित्तूर पर लहराने लगा। रानी चेन्नम्मा को बन्दी बनाया गया। 2 फरवरी, सन् 1829 ई० को बेलहोंगल के किले में उसकी मृत्यु हो गई। रानी की वीरता, साहस, पराक्रम तथा देशभक्ति कित्तूर वासियों के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुई। । बेलहोंगल में बना रानी चेन्नम्मा स्मारक और धारवाड़ का कित्तूर चेन्नम्मा पार्क रानी की वीरता, त्याग और उत्सर्ग की याद दिलाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/